

**लढल दढुतुतु**  
**शुुरी गुरुगल दलस लढल ँवुं सुुी डुनुरुडल लढल, गुवललर**  
**के दलडुतुतु कुरुवन की सुवरुणुड वरुषगलंठ डर दलरल गलर वकुतुवु**  
(सुथलन— डलउणुट आडू, दलनलंक—6 डरुई 2012)

लढल दढुतुतु कुु उनुके वुैवलहुक कुरुवन की सुनुहरी सललगलरह के सुअवसर डर हलरुदुक डधलरुई और डंगलकलडुनलं। उनुके डरलरलर के सडुी सदसुड, डलतुरगण, सुनेही सऑऑन और हलतेषुी, ऑु आऑ डडुी संखुडल डें डहलं उडसुथलत हैं, उनुहुें डुी डधलरुई कल वे इस अनुूठे आऑऑन के सलकुषुी डने हैं । इस संधुडलकलुीन आऑऑन डें सडुडलललत हुुने के ललए आड सडुी कल आडलर, अडलननुदन ।

डुरतलदलन, डुरतलकुषण डुनुरुऑन ,आडुद—डुरडुद की वुडवसुथल है। उतुसव ऑुैसल वलतलवरण है। कुऑ वलनुद की डलत की ऑलए ।

आऑ कुऑ ही सडुड डुरुव हडुने डलरलत देखुी । 'वर—डलतुरल' डलनी डलरलत ऑलसडे डुषुड सऑऑलत रथ डें सवलर हुुकर दूल्हल—दुलहलन डंडड डें डधलरे !डलरलत डे डुटे—डुटी, नलती—डुते डुी सडुडलललत थे ! वर—डललल हुुई। डूऑुड सुवलडुी ऑुी ने नव दढुतुतु कुु डंतुरुऑुवलर कर वलधलवत आशुीषलत कलरल।देखुते—देखुते सडुड कलतनल डदल गलल।गुगलल ऑुी और डुनुरुडल ऑुी कल वलवलह 1962 डें हुुआ थल। 1962 और 2012। 1962 डें दूल्हल डलरलत लेकर आतल थल ,दुलहलन कुु वलदल करल कर ले ऑलतल थल ! डहलं दूल्हल—दुलहलन कुु सलथ लेकर आडल है ! 1962 डें दलदल—दलदी अडुने नलती—डुतुलं कल वलवलह रऑलते थे ,डहलं नलती—डुते,हैं ऑुी दलदल—दलदी, नलनल—नलनी कल वलवलह रऑल रहे हैं!! 1962 डें वलवलह डलहलले हुुतल थल , डलद डें डऑुवे। डहलं डऑुवे वलवलह से डलहलले ही डुलऑुद हैं!!! सुवलडुी ऑुी ने इस डुगलल कुु आधुडलतुडलक आशुीष दी है। हडु सडु इसुहें संसलरलक औडऑलरलकतल कल नलरुवहन करुते हुुए शुडकलडुनल देते हैं, ऑुैसुी कल इन अवसरुं डर दी ऑलतुी है—दूधुं नहलओ और डुतुलं डलुुु !!!

ऑुीवन ँक आननुद है,उतुसव है,उसे डुनलते रहनल ऑलहलडे । डुनलने के ललए डहलनल ऑलहलए। इस उतुसव के आऑऑन कर्तुलओुं के हडु सडुी कृतऑ हैं। लढल दढुतुतु के डुी कल वे ऑलनुदलदललुी के सलथ 1962 कुु दुुहरल रहे हैं, हडलरी खलतलर ।

अड कुऑ कलड की डलत ।

लढल दढुतुतु — आदरणीड शुुरी गुगलल ऑुी लढल और डूऑुडुनीड शुुरीडती डुनुरुडल लढल। दुुनुं उडुर डें डुऑु से ऑुुटे हैं कलनुतु आदरुश और गुणुं डें डुऑुसे डहुतु डुडे। इसुनलनलडत के वे आदरुश ऑुलनुहें दुैवुी सडुडदल कलल ऑलतल है, उस धरलतल डर

बहुत ऊंचा कद है उनका। इसलिए वे मेरे लिए कमशः 'आदरणीय' और 'पूज्यनीय' हैं। इस दम्पति के प्रति मेरे मन में अनुराग ही नहीं, अपार आदर और श्रद्धा है। उनके अनेक अवर्णनीय उपकार मुझ पर और मेरे परिवार पर हैं। वे मेरे आश्रयदाता रहे हैं और हमारे संकटमोचक भी। कुछ भावनाओं को संक्षिप्त आभिव्यक्ति देना चाहता हूं, मेरी धर्मपत्नी और मेरी ओर से ही नहीं, समस्त लाहोटी परिवार की ओर से।

दो पंक्तियों से प्रारंभ करता हूं :

**कुछ लोग होते हैं इतने हसीन कि मिलते ही एक बार  
हो जाते हैं आंखों में ज़ज्ब, और दिल में समा जाते हैं।**

कुछ व्यक्तियों का व्यक्तित्व इतना गुणाभूषित होता है कि वे पहिली नजर में ही आंखों के रास्ते दिल में उतर जाते हैं और सदा-सदा के लिए वहां बैठ जाते हैं।

इस युगल के विषय में जो भी कहना हो आधे समय में ही कह दिया जा सकता है। इसलिए कि ये दो नहीं, एक ही हैं। जो एक के विषय में कहूंगा वह दूसरे पर भी लागू होता है।

इनके व्यक्तित्व के तीन पक्ष आपके सामने रखता हूं—प्रथम, व्यक्ति के रूप में। द्वितीय, कर्मक्षेत्र में, समाज की सेवा के क्षेत्र में। और, अन्त में, एक दम्पति के रूप में।

**व्यक्ति के रूप में।** स्थित प्रज्ञ (steadfast)। उनकी जीवन जीने की शैली ऐसी है जैसे वीणा का वादन। वीणा से मधुर संगीत तभी उत्पन्न होता है जब उसके तार न तो ढीले हों, न बहुत खिंचे हुए। तब बजाने वाले को भी आनन्द आता है, सुनने वाले को भी। न प्रमाद, न तनाव। दुःख हो, सुख हो; घर हो, बाहर हो; उनका जीवन ऐसे चलता है जैसे संगीत की लय। दिनचर्या, जीवन पद्धति, जीवन जीने की कला; कहीं भी, न अति प्रसन्न, न अति दुःखी। हां, दूसरे के दुःख में दुःखी अवश्य।

**कर्म क्षेत्र में।** गोपाल जी चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट हैं। जीवकोपार्जन के लिए व्यवसाय, उद्योग तो सभी करते हैं; वे भी करते हैं। किन्तु, उनमें और दूसरों में अंतर है। व्यवसाय करते हुए उनका पहिला लक्ष्य होता है सेवा, ग्राहक की सेवा। अर्थोपार्जन द्वितीयक (secondary) है या आनुषांगिक। उनका मनोभाव निष्ठा

और सेवा का होता है। भाव और दृष्टिकोण का यह अन्तर उन्हें परम धर्म का पथिक बना देता है।

स्वधर्म का पालन परम धर्म के रूप में करने वाला व्यक्ति पारिवारिक जीवन में गृहस्थ सन्त होता है और व्यावसायिक जीवन में कर्म योगी। यही भाव मनोरमा जी का भी उनके अपने कार्यक्षेत्र में है। चाहे परिवार की सेवा हो, चाहे समाज की सेवा इन दोनों के जीवन में गीता का यह संदेश और भगवान महावीर की वाणी साकार लक्षित होते हैं कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महानता को प्राप्त होता है।

गोपाल जी यूं तो स्वभाव से ही सेवा भावी हैं किन्तु सेवा को साकार दृश्य रूप देने की दृष्टि से वे लायन्स, चेम्बर ऑफ कामर्स, भारत विकास परिषद् जैसी अनेक संस्थाओं से सक्रिय होकर जुड़े हैं और नेतृत्व भी प्रदान करते रहे हैं। मनोरमाजी भी अनेक सेवा संस्थाओं और संगठनों से जुड़ी हुई है, अखिल भारतीय स्तर पर शीर्षस्थ नेतृत्व भी प्रदान कर चुकी हैं, कर रही है। यह उन्हीं की चमत्कारिक क्षमता और योग्यता है कि उनने सारे परिवार को सुगठित संस्था के रूप में बांध कर रखा और ऊपर उठाया है। और, हर संस्था जिससे वे जुड़ी है उसे एक परिवार का रूप दे दिया है।

**दम्पति के रूप में**। आज जब वे अपने विवाह की स्वर्णजयन्ती मना रहे हैं, अतुल और सौ. डॉ. ममता जैसे पुत्र-पुत्री हैं, सौ. सुनीता जैसी बहू और अनिल जी जैसे दामाद हैं, इन्हें देख कर लगता है कि अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष के सभी उपादान उनने अपने सद्कर्मों से हस्तगत किये हैं। पुत्र अतुल, बहू सुनीता। बेटी ममता और दामाद अनिल। कहावत है कि नाम में क्या रखा है ? गुलाब को यदि किसी ओर नाम से पुकारो तो भी उसके रंग, महक, कोमलता और सौन्दर्य में कोई अन्तर पड़ने वाला नहीं है। किन्तु वे माता-पिता दूरदृष्टि से सम्पन्न होते हैं जो अपने बच्चों का नाम सोच समझ कर रखते हैं और वे बच्चे धन्य होते हैं जो अपने माता-पिता के द्वारा दिये गए नाम को सार्थक करते हैं। यह 'सुनीता' की 'सुनीति' है जिसने 'अतुल' से एक 'अतुलनीय' आयाजन करा दिया। माता-पिता के वैवाहिक जीवन की स्वर्ण ग्रन्थि का द्विदिवसीय आयोजन, जैसा अतुल और सुनीता ने किया है उसकी तुलना का कोई आयोजन मेरी स्मृति में मैंने देखा नहीं। उत्साह, उल्लास और आनन्द से सरोबार। व्यवस्थायें बेदाग। 'ममता' 'ममत्व' की प्रति मूरत है। उसके ममत्व का यह भाव अपने से छोटों के लिए तो है ही, अपनों से बड़ों के लिए भी है। इसकी अनुभूति दिल्ली में रहते हुए मैं और मेरा परिवार करते रहते हैं। अनिल जी। मुझे लगता है कि उनके नाम में अंग्रेजी और हिन्दी का मिश्रण है। वे 'अ-निल' हैं। यह अनिल जी का साथ है जो

ममता का ममत्त्व कभी भी 'निल' नहीं होने देता, न होने देगा। वह 'अ-निल' है और बना रहेगा।

लढा दम्पति और यह आयोजन देख कर रामचरित मानस का एक प्रसंग स्मरण हो आता है। सरयू के पार उतर कर जब भगवान राम केवट से कुछ लेने के लिए आग्रह करते हैं तो केवट ने कहा है —

**नाथ आज मैं काह न पावा। मिटे दोष, / दुःख, / दारिद्र, / दाहा।।**

केवट ने कहा—प्रभू, अब मैं आप से क्या मांगू? मांगने के लिए बचा ही क्या है ? मैंने आज सब कुछ पा लिया। मनुष्य जो पा सकता है और जिसे पाने के पश्चात् पाने के लिए कुछ बचता ही नहीं है वह मुझे मिल गया है।

केवट ने क्या पा लिया ? केवट कहता है कि मेरे सारे दोष मिट गए, मैं निर्दोष हो गया हूँ; मेरे जीवन में कोई दुःख नहीं है, मैं सुखी हूँ। मेरा दारिद्र दूर हो गया, हृदय में कोई दग्धता नहीं रही, चित्त प्रसन्न है। अब और क्या चाहिए जो मांग लूँ। केवट के इस कथन के पृष्ठ भूमि में लढा दम्पति को प्रथक-प्रथक और एक युगल के रूप में देखें।

इनका जीवन दोष रहित है। चरित्र निष्कलंक, निर्मल है। **अब तो मन निर्मल भया चुग-चुग मोती खात**। कोई दुःख नहीं है। सर्वत्र सुख की अनुभूति करते हैं। सर्वत्र सुख का सृजन और वितरण करते हैं। **कबिरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगें खैर। ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर**। किसी भी प्रकार का अभाव नहीं है। मानस की इस चौपाई में 'दारिद्र' शब्द का प्रयोग मन के संदर्भ में किया गया है। धन की दरिद्रता तो कभी दूर हो ही नहीं सकती। जिसके पास लाख है, उसे करोड़ चाहिए। जिसके पास करोड़ है उसे अरब चाहिए। ईश्वर ने जो दिया है उसे कृतज्ञता पूर्वक पर्याप्त मान कर सन्तोष करना ही दारिद्र को दूर करने का साधन है। **चाह मिटी, चिंता गई, मनुआ बेपरवाह। जिनको कछु ना चाहिए सो ही शहंशाह**। ना इन्हें अब कोई चाह है, न चिन्ता है, बेपरवाह हो कर भगवद् स्मरण और सद्कर्म करते हैं। इसलिए 'शहंशाह' है। इनके निकट 'दारिद्रता' फटकती भी नहीं है।

जो काम, क्रोध, मद, मोह—चतुर्दोष में से एक भी दोष से युक्त होता है उसका हृदय दग्ध रहता है। शारीरिक कष्ट हो या नहीं, मानसिक पीड़ा उसे घेरे रहती है। इस दम्पति को सांसारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए भी विकारों से मुक्त जीवन जीते हुए मैंने देखा है। इसलिए कहता हूँ कि वे गृहस्थ होते हुए भी सन्यस्थ

हैं। सुख और दुःख के बीच रहते हुए भी न सुखी होते हैं, न दुःखी; बस आनन्दित रहते हैं।

रामचरित मानस की इस चौपाई में सम्पूर्ण पुरुष, मनुष्य जीवन की सार्थकता और पूर्णता की परिभाषा है। जिसमें कोई दोष न हो, जिसका चरित्र निष्कलंक हो; जिसे कोई कष्ट न हो; जिसके जीवन में दरिद्रता का लेश भी न हो, जो सम्पूर्णतः सन्तुष्ट हो और जिसका हृदय कभी दग्ध न होता हो, जो ईर्ष्या, राग-द्वेष, मान-अपमान आदि की सांसारिक अनुभूतियों से ऊपर उठ चुका हो। ऐसा व्यक्ति संपूर्ण पुरुष – पुरोधा होता है।

लढा-दम्पति में समाहित, दोनों ही व्यक्तित्व ऐसे ही पुरोधा हैं।

देवियो और सज्जनवृन्द। मित्रगण। लड्डा दम्पति की प्रशंसा में दो दिन से हम सब बहुत कुछ सुन रहे हैं। इतने आकर्षक व्यक्तित्व के धनी इस युगल को नजर न लग जाए इसलिए काला टीका लगाना भी जरूरी है। इजाजत हो तो दो छोटी-छोटी टीकियां लगा दूं ?

पहिली टीकी। लोग इन्हें सुखी कहते हैं पर सच तो यह है कि इन जैसा दुःखी इन्सान शायद ही मिले। जब देखो तब आंखों में आंसू। क्यों ? ये पंक्तियां उत्तर देती हैं—**दर्द ही दर्द भर गया दिल में, इतना हस्सास कर दिया गम ने। जब भी गिरा किसी आंख से आंसू अपनी आंखों में ले लिया हम ने।** किसी की पीड़ा किसी का दुःख देख नहीं सकते। जमाने के आंसू अपनी आंखों में भरे रहते हैं।

दूसरी टीकी। हमेशा परस्पर झगड़ते रहते हैं। इनकी आपस की बातें मैंने सुनी हैं। पत्नी पति से कहती है— 'आप मुझ से बढ़ कर हैं'। पति देव पत्नी से सहमत नहीं होते। कहते हैं —'नहीं, नहीं, आप मुझ से बड़ी हो।'।

हमारी मान्यता है और परम्परा भी कि पत्नी पति से छोटी होती है। पर गोपाल जी ऐसे पति हैं जो गर्व के साथ कहते हैं— **वो और होंगे जो कमसिन को लगा रखते हैं, ! हम तो माशूक भी अपने से बड़ा रखते हैं।** अब बताइए कि इस झगड़े को कौन सुलझाये ?

हम इन्हें कैसा देखते हैं और कैसा समझते हैं, इसकी चर्चा हो चुकी। अपनी बात समाप्त करता हूं आपको यह बता कर कि सर्वथा एकाकी आन्तरिक क्षणों में ये एक दूसरे को क्या समझते हैं? सूफी सन्त रूमी की रचना का यह हिन्दी अनुवाद इसे ठीक ठीक व्यक्त करता है। वे एक दूसरे को कहते हैं—

मत करो स्वर्ग की बात मुझ से  
स्वर्ग तो भक्त जनों के लिए होता है  
मैंने तो कभी भी साधना में विश्वास नहीं रखा  
तुम ही मेरे पास हो तो मुझे स्वर्ग की तलाश क्यों हो  
तुम ही मेरे स्वर्ग हो / तुम ही मेरी स्वर्ग हो

इन शब्दों के साथ इस दम्पति के लिए हम सभी की शुभ कामनायें, मंगल कामनायें ।

—रमेश चन्द्र लाहोटी

—सौ.कौशल्या देवी लाहोटी

////////////////////////////////////